JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संतोष अलेक्स की कविता में प्रकृति

चतुरेश अहिरवार शोधार्थी
डॉ.जी.पी. अहिरवार
एसोसिएट प्रोफेसर शोध निदेशक
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
दमोह म.प्र.

सारांश

प्रकृति को समझने और उसके रहस्यों को जानने के लिये हम भौतिक, सांस्कृतिक तथा अध्यात्मिकता का अध्ययन करते है। प्रकृति के साहचर्य में मनुष्य स्वयं को विकसित करता है एवं जो भौतिक , सांरस्कृतिक तथ्य में प्रकृतिक कविताएं होती है वह कभी–कभी भौतिक तत्वों की कविताएं प्रकृति पर विद्यमान रहती है। वस्तुतः मुनष्य सौन्दर्भ पासक प्राणी है। हम सौंदर्य पासक द्वारा हम सुंदर वस्तुओं के सार्थक कर अपनी ओर सम्पूर्ण विश्व के एकत्व की स्थापना करते है एवं सौन्दर्भपासक में विश्व व्यापी उपासना का मूल उद्देश्य है। प्रकृति कविताओं के माध्यम से कवि अपनी कविता को प्रस्तुत करता है। जिसके द्वारा मानव उस सौन्दर्यता की झलक प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। सुन्दर वस्तुओं का वह अपने काव्यात्मक रूप से कविता को पेश करता है, जो मनोहारणी व सुंदरता प्राप्त होती है।

की –वर्ड : विविध, प्रकृति, संस्कृति, सौन्दर्यता, उपासना, मनुष्य

प्रस्तावना :

विविध प्रकृति दृश्यों के चित्रण द्वारा कवियों ने समष्टि के आदर्श के साथ व्यक्ति के आदर्श की भी समानता दिखाई जाती है। चूंकि अलौकिक सौन्दर्य, दृष्टि की कवि प्रतिभा का मूल तव्व मानी जाती है। अतः कवितों में बाह जगत आभ्यन्तिरक जगत वैदिक और आध्यात्मिक जगत से सौन्दर्य की मनोरंजन झांकी अपनी कृतियों में प्रस्तुत की है।

मैं मनुष्य से कम प्यार नही करता, प्रकृति से अधिक प्यार करता हूँ।

यदि सौन्दर्भ भावना मानस परख है तो प्रकृति सौन्दर्य मानव की कलात्मक दृष्टि का परिणाम है।

कोशे के शब्दो में :– प्रकृति उसी व्यक्ति के लिये सुन्दर है जो उसे कलाकार की दृष्टि से देखता है। एस. अलेक्जेन्डर का भी यही विचार है।

1 "कामायी के काव्य संस्कृति और दर्शन" डॉ द्वारिका प्रसाद (पृ. कं. 75)

2 "निराला काव्य एक मूल्याकंन" डॉ बाबूराम त्रिपाठी (पृ. कं. 81)

—2—

प्रकृति तभी मनोहारणी प्रतीत होती है जब हम उसे कलाकार की दृष्टि से देखते है। वास्तव में कलाकार और साधारण दोनों ही व्यक्ति में सौन्दर्यानुभूति क्षमता विद्यमान रहती है। परन्तु कलाकार अपनी व्यापक दृष्टि और प्रत्यक्ष ग्रहण की शक्ति के कारण अपनी अभिव्यक्ति की प्रेरणा शक्ति के द्वारा व्यापक विस्तार से विभिन्न प्राकृति दृश्यों का चयन कर अपनी सौन्दर्यानुभूति के योग से उनका मर्म स्पर्शी चित्रण करता है। जो कि प्राकृतिक स्वरूप में देखा जाता है। प्रकृति मानव की आदिम सहचरी है। मानव ने जब आंखे खोली होंगी तो स्वयं को प्रकृति की सुरम्य गोद में ही पाया होगा। प्रकृति मानव के क्रियाकलापों की चित्रमयी रंगस्थली है। जिसके बिना मानव जीवन का नाटर अधूरा ही रह जाता है। भारत प्रकृति नदी का सुरम्य क्रीडास्थल है। यह ही दुग्ध धबल चॉदनी चिलचिलाती धूप रिमझिम बरसती बर्षा, सरसराती हुई शरद तथा पीत साडी से सुशोभित बसंतवधु अपने सौन्दर्य से मानव मन को विमोहित और विमुग्ध करती रही है।

'साहित्य में प्रकृति चित्रण :— हिन्दी साहित्य के विभिन्न कांलो में प्रकृति चित्रण देखने को मिलता है। काव्य में प्रकृति चित्रण की विभिन्न प्रणालियॉ प्रचलित है जिनका हमारे समीक्षकों ने उल्लेख किया है।

आलम्बन रूप में हमें पाठक को साक्षता प्रकृति के दर्शन का आनन्द प्राप्त होता है, क्योंकि कवि प्रकृति का स्वतंत्र रूप से चित्रण करता है, इसमें प्रकृति भावनाओं को उघीपन करने में सहायक होती है। चॉदनी रात को देखकर वियोगित का दुख औ बढ़ जाता है, अलंकार या अलंकृत रूप में इसमें अलंकरों का सहारा लेकर प्रकृति का वर्णन किया जाता है।

मानवीकरनण रूप में जब प्रकृति को संजीव रूप से रूप से उपस्थित कर उसे मानवीय रूप प्रदान किया जाता है तब उसे मानवीकरण रूप कहते है।

प्रतीक जब कवि अपने भावों को स्पष्ट रूप में न कहकर उन्हें प्रतीकों के माध्यम से व्यतीत करता है तो प्रतीत होता है, नीति और उपदेश का माध्यम इनमें नीति उपदेश के रूप में प्रकृति का वर्णन होता है।

3 हिन्दी साहित्य कोष : धीरेन्द्र वर्मा (पृ. कं. 12)

4 आधुनिक काव्य भाषा : डा. रामकुमार सिंह (पृ. कं. 59)

—3—

युवा कवि सन्तोष अलेक्स हिन्दी कविता के क्षेत्र में चर्चित नाम है। अपने तीन कविता संग्रहों के माध्यम से उन्होंने अपनी पहचान बनाई है। सन्तोष की कविताओं के केन्द्र में प्रकृति और मनुष्य है

आलोचक आशीष कुमार के अनुसार सन्तोष की कविताओं में प्रकृति का एक खास पायदान रहा है। दरअसल उनकी कविता प्रकृति के माध्यम से स्वयं संवाद की कोशिश है। प्रस्तुत आलेख में संतोष की कविता में प्रकृति पर चर्चा की जा रही है।

अलेक्स की कविता में प्रकृति :

प्रकृति मानव जीवन के लिये मॉ के समान है। क्योंकि प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना नही की जा सकती । प्रकृति हमें जीवनयापन करने करने के लिये बहुत सारे संसाधन उपलब्ध कराती है, जिसका उपयोग कर मनुष्य अपना जीवन सरल और सुखमय बनाता है। प्रकृति मनुष्य को शुद्ध हवा, शुद्ध भोजन, तरल पदार्थ, फल एवं अन्य प्राकृतिक संसाधन उपहार में देती है। जिससे मानव जीवन बहुत सरल हो जाता है।

मानवतावादी व्यक्ति, जैसे मनुष्य से प्यार करता है, वैसे ही प्रकृति से भी करता है। वह जानता है कि प्रकृति के बिना मनुष्य अधूरा है। अलेक्स की कविताओं में प्रकृति चित्रण हुआ है। उनकी कविताओं में प्रकृति अलग तरह से दिखाई देती है। इनकी कविता "गॉव की सड़क" जो "पांव तले की मिट्टी" संग्रह से ली गई है। इस कविता में प्रकृति का प्रभाव देखने को मिलता है।

सड़क जहां मुडती है
वहां दोनो तरफ खेत है
कहीं पर सड़क के संग
क्यारिंया दिखती है कहीं गड़ेरिया
भेड़ों को हांकते हुए ले जा रहा है
कहीं कुल्फीवाले को
बच्चों ने घेर लिया है
तो कभी नौ बजे की बस
पॉम पॉम करती हुई
साढे दस बजे पहुंचती है
हाट के पास उसके मुड़ने पर
धूल से लथ पथ यात्री व रिक्शेवाला
किसी पेंटिंग से भी
कम सुंदर नहीं लगते।

(5) अनुवादक ब्लाग आशीष कुमार 17 जुलाई 2014

कवि ने उपरोक्त इस कविता के माध्यम से प्रकृति और गॉव के वातावरण को प्रकृति किस तरह समेटे हुये है कि कवि ने इस कविता के माध्यम से बताया है कवि का जो भाव है कि मानो हमारा देश और संसार इस प्रकृति का बनाया हुआ है, जिससे यह पता चलता है कि सड़क जहां पर मुड़ती है वहां दोनो तरफ खेत है। कवि कहता है कि जो गॉव की सड़के होती है उनके बीच में गॉव से शहर की ओर जो सड़क जाती है, उसके अलग–अलग बगल खेत है, जो प्रकृति का स्वरूप है और कहीं पर सड़क के साथ पर लोगों के खेत है जिसमें क्यारियां बनी हुई है उनकी यह प्रकृति के प्रति जो खेतों में बगीचों में थोडी थोडी इस पार और उस पार सड़क के साथ क्यारियां बनाई है, जिसमें बीज बोया जाता है। वह कितना सुहाना लगाता है एवं पौधे लगाये जाते है। जिससे कवि कहता है कि प्रकृति कि लिये पेड़ो की जरूरत है, इसलिये इन क्यारियों में बीज बोया जाता है। जिससे हमें अनेक प्रकार के पेड़ पौधे उगते है जो हमारी प्रकृति को स्वच्छ बनाने के लिये लाभदायक है। कवि कहना चाहता है कि जो एक जाति होती है जिसे हम गड़रिया या गड़ेरिया बोलते है वह सुबह सुबह उस सड़क से अपनी भेड़ो को हांकते हुये ले जा रहा है एवं प्रकृति के अनुसार जब मौसम में परिवर्तन होता है उसी प्रकार से जब गर्मियों के दिन में कुल्फी वाला आता है तो बच्चे उसे घेर लेते है। एवं कवि ने अपनी इस कविता को एक छोटे से गॉव की ओर आती है। जिसमें गॉव के हॉट बाजार आते है यह प्रकृति का ही एक स्वरूप है कि सुबह गॉव से गुजरने वाली बस शाम को फिर गॉव की ओर लौटती है। जिससे गर्मियों के मौसम में खूव हवांए बडी ही तेज चलती है और लू चलती है। उस हवाओं से जो बाजार के लोग वह धूल में लथपथ हो जाते है, मानो प्रकृति ने इन्हें अपने आवेश में ले लिया हो, इससे यह पता चलता है कि कवि कितना ज्यादा प्रकृति वादी कवि है। वही जो रिक्शे वाला व्यक्ति किसी की पेंटिंग से कम सुंदर नही लगता , क्योंकि हवाओं के साथ भी उसके उपर धूल लग जाती है। कवि कहता है कि इस प्रकृति पर हमारा जीवन संभव नही है। जो इस कविता के माध्यम से अलेक्स ने कहा है कि गॉव में किस तरह मनुष्य अपना जीवन यापन करता है। और प्रकृति के वातावरण में रहता है। अलेक्स अपनी कविताओं में कहते है कि – उसी बाजार में कई लोग खड़े है जो

बीड़ी पी रहे है और अपने गॉव के लोग गॉव छोड़कर शहर जाते है और कई लोग शहर से गॉव आते है। कवि कहता है कि इस प्रकृति को अपने वातावरण से अलग नही रख सकती है। इससे पता चलता है कि कवि के अंदर और इस कविता में जो गॉव की सडत्रक कविता है कवि ने इस कविता में प्रकृति का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है।

हाट के बंद होने की सूचना देकर
बस चली जाती है
सड़क वीरान हो जाती है
वावजूद इसके
वह सुबह फिर एक नए दिन के
लिए तैयार होती है
हमरे संग

और जब पूरे दिन हो जाता है तो शाम के समय बाजाद बंद होने की सूचना मिलते ही वहां पर बसें गाड़ी रखी हुई है , वह शाम के समय में अपने सभी लोगों को बैठकार गॉव के की ओर वापिस आ जाती है। मानो कि इस प्रकृति में सबकुछ हो रहा है। क्योंकि बाजार सड़क शाम के वक्त रात्रि में वीरान हो जाते है। क्योंकि फिर रात्रि के समय व प्रकृति के नियम है कि सुबह शाम और रात का होना होता है। इससे कवि कहता है। कि गॉव में किस तरह से पूरे दिन लोगों का काम चलता रहता है। इससे पता चलता है कि कवि ने इस कविता के माध्यम से यह कहा है। कि प्रकृति से अलग होकर कोई नही रह सकता, क्योकि गॉव की सड़क कविता में जो गॉव का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है जो प्रकृति के आधार पर निर्भर है। इस कविता को प्राकृतिक स्वरूप कहा जा सकता है। कवि यह कहना चाहता है कि फिर से नये दिन की शुरूआत होगी , फिर से लोग नये दिन के साथ अपना अपना काम चालू करेंगे। इससे पता चलता है कवि कितना अधिक प्रकतिवादी कवि है। जो इस कविता के माध्यम से हमें पता लगता है। इस कविता को हम प्रकृतिवादी कविता कह सकते है।

1 संतोष अलेक्स "पॉव तले की मिट्टी" काव्य संग्रह में "गॉव की सड़क" कविता
(पृ.क्रं. 30)

—6—

अलेक्स की कविता ''प्रगति'' में प्रकृतिवाद :–

अलेक्स की कविताओं में प्रगति कविता में प्राकृतिवाद की एक अह्म भूमिका है एवं प्रकृतिवाद मानवतावाद का एक अंग है। एंव कवि ने अपनी इस प्रगति कविता से प्रकृति का एक स्वरूप प्रदर्शित किया है, जो इस कविता में दिखाई पड़ता है प्रगति कविता में प्रकृति के संदर्भ में इस कविता को कवि ने कहा है। उनका काव्य संग्रह पांव तले की मिट्टी है जिसमें एक कविता प्रगति है यह कवि की

प्रकृतिवादी कविता है। प्रगति कविता में कवि ने अपने गॉव का मधुमय महक का गुणगान किया है। कवि ने प्रकृति से जुड़े सभी तरह के दौर में कवि ने अपने परिवेश में आये परिवर्तन को सूक्ष्मता से इस कविता में प्रकृति का चित्रण दिखाया है।

उसके घर की छत को
चूमने वाला वृक्ष अब नही रहा
स्कूल की ओर की पगडंडी
विस्तार पा गई
खेतों की जगह पर
समतल मैदानर है
वहां फेंस पर बोर्ड टंगा है
– साइट फार सेल,

अलेक्स ने इस प्रगति कविता जो प्रकृतिवादी है, उसका बडे ही मार्मिम ढंग से व्याख्याना किया है। जो उनके घर से पास वृक्ष था अंब वह नही रहा है। जो वृक्ष उनकी छत पर वृक्ष की डाल थी वह अब नही रही, उसे काटकर समतल मैदान कर दिया गया। कवि इतना प्रकृतिवादी है कि इस कविता के माध्यम से कहता है कि जो स्कूल की ओर पगडंडियां थी उसे नष्ट कर दिया गया है और उसे फलैट बना रहे है। जिसमें साथ तथत्म रखते हुये कवि अलेक्स इस बात का इंगित करते हुये हुये हमारे लिये बडी छिपी की बात है। कि हमारे खेत खत्म हो रहे है, इस तरह के फलैट बनाने से।

(1) संतोष अलेक्स की मानववाद में "प्रगति कविता" में प्रकृति वाद (पृ.क्र.52)

–7–

घुटनों पर लगाये जाने वाली मरहम की पट्यिों
व झाड़ फूस ने किताबों में
जगत बना ली
पनघट की टूटी फूटी सीढियां
अब किसी का इंतजार नहीं करतीं
सीढियों पर बैठकर वह मुस्कुराया
उसकी मुस्कुराहट में दूर तक फैली सूखी नदी थी

कविता में माध्यम से कवि कहता है कि जो हमारी पहले प्रकृति से जो बुजुर्ग लोगों को जड़ी को जड़ी बूटी मिलती थी वह अब नही मिलती क्योंकि प्रकृति को काटकर उसमें फलैट बना दिये गये।

प्रकृति पर हो रहे अत्याचार का वर्णन किया है और कहा है कि जंगलो से मिलने वाली जो हरी पत्ति जिसको मसल कर व पीसकर उसमें हरी पेड़ का जूस निकलता है उसे घुटनों में लगाने से घुटनों का दर्द सही हो जाता है। इस तरह से कवि ने कहा है कि झाड़ फूंस के पौधे छोटे छोटे थे, जो हम चिकित्सक के रूप में उपयोग में लाते थे उनको नष्ट कर दिया गया है। और प्रकृति से जो पौधे की जड़ी बूटी आयुर्वेदिक के लिये दवा देते थे जिससे कई प्रकार के सभी दर्द ठीक होते और वनस्पति का नष्ट कर समतल मैदान बना दिया जिससे हमारी गांव की सौन्दर्यता नष्ट हो रही है और जहां पर पनघट था, वहां पर जो पनघट का घाट था उसे खत्म कर वहां की सीढ़िया को तोड़कर नष्ट कर दिया गया व नदी को भी समतल कर दिया गया। जिससे हमारी प्रकृति नष्ट हो रही है।

अलेक्स की प्रगति कविता में अलग अलग तरह से उनका लगाव देखने को मिलता है और इस तरह से प्रकृति को काट कर उसे नष्ट कर दिया गया है। जिससे हमारी प्रकृति नष्ट हो रही है। इस कविता के माध्यम से कवि ने हो रहे प्रकृति पर अत्याचार रोकने के लिये प्रकृति को बचाने का भी चिंतन किया है। इस तरह से यह कविता प्रकृतिवादी कविता कही जा सकती है।

(1) अलेक्स की "पॉव तले की मिट्टी" काव्य संग्रह में प्रगति कविता (पृ.क्रं. 15)

–8–

उपसंहार–

हमारे हिन्दी काव्य के सभी कवियों ने अपने काव्यों में प्रकृति को बडे ही मानवीकरण रूप से दर्शाया है, जिससे काव्य अत्यधिक आकर्षित लगता है व मनुष्य काव्य को पढ़ने के लिये अत्याधिक उत्सुक हो जाता है। और इस प्रकृति का मानवीकरण प्राकृतिक चित्रण का पढ़कर मनुष्य का हद्य आनन्द विभोर हो उठता है। जिसके कारण वह प्रकृति को एक अलग नजरिया से देखने का प्रयास करता है।

संदर्भ सूची–

(1) कामायनी के काव्य संस्कृतिक और दर्शन डा. द्वारिका प्रसाद 2014 प्रकाशन राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली (पृष्ठ 75)

(2) "निराला काव्य" एक मूल्याकंन डा. बाबूराम त्रिपाठी 2016 विविध आयाम वार्णाद प्रकाशन नई दिल्ली (पृष्ठ 81)

(3) "पुष्पदीप" केदारनाथ अग्रवाल 1997 परिमल प्रकाशन साहित्य भंडार आगरा उ.प्र. (पृष्ठ 37)

(4) महादेव वर्मा काव्य चेतना और शिल्प डा. संजीव कुमार 2014 इंडिया नेट बुक्स प्राईवेट लिमिटेड मुख्यालय एनसीआर दिल्ली (पृष्ठ 56)

(5) "हिन्दी साहित्य" कोष डा. धीरेन्द्र वर्मा प्रधान 2018 ज्ञानमाल मालनदार लिमिटेड मुख्यालय सी.आर. नई दिल्ली (पृष्ठ 12)

(6) आधुनिक काव्य भाषा डा. राम कुमार सिह 2012 सत्यनारायण साहित्य भंडार बनारस (पृष्ठ 59)

(7) "अनुवादक ब्लाग" आशीष कुमार 17 जुलाई 2014

(8) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रगतिशील चेतना कु. प्रज्ञा शर्मा 2004 अंकुर प्रकाशन नई दिल्ली (पृष्ठ 22)

(9) "प्रतिनिधि कहानियॉ" ज्ञान रंजन 1984 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली (पृष्ठ 51)

(10) समकालीन कहानी दिशा और दृष्टि धनंजय 1970 अभिव्यक्ति प्रकाशन इलाहाबाद (पृष्ठ 32)

(11) "पांव तले की मिट्टी काव्य संग्रह" में "गांव की सड़क कविता" – संतोष अलेक्स प्रतिश्रुति प्रकाशन कलकत्ता 2015 (पृष्ठ 30)

(12) पांव तले की मिट्टी काव्य संग्रह में "प्रगति कविता" – संतोष अलेक्स प्रतिश्रुति प्रकाशन कलकत्ता 2015 (पृष्ठ 15)